



okfud hvubzku  
, oaf kkk i fj "kn~

vuqef. kdk

egRoi wZvubzku fu"d "k

ou vubzku l hFku] nsj knw

• विभिन्न रंगबंधन परिस्थितियों के अंतर्गत प्रोसोपिस ज्यूलीफ्लोरा से विकसित प्राकृतिक रंजकों से रंजित सूती, ऊनी एवं कपास के कपड़ों का CIEL\*a\*b विश्लेषण निर्धारित किया गया।

• विभिन्न पुनर्पुनरावसनों (cohobations) के उपयोग से एकत्रित सिमबोपोगॉन फ्लेक्सयूओसस (लेमनग्रास) से आवश्यक तेल का निष्कर्षण भी किया गया। सगंध तेल का उत्पादन प्रतिशत पुनर्पुनरावसन नलिका (cohobation tube) के उपयोग द्वारा 1.94 प्रतिशत थी, जबकि बिना किसी पुनर्पुनरावसन (cohobation) द्वारा यह 1.478 प्रतिशत थी।

• उत्तराखण्ड के चकराता व मसूरी क्षेत्रों तथा हिमाचल प्रदेश के रोहडू, सोलन तथा रेणुकाजी अंचलों में सर्वेक्षण किए गए। बायोजोनिआ पिस्टासिए द्वारा पिस्टासिआ इण्टीगेरिमा पर संक्रमण दर्ज किया गया। वृक्षों पर अर्बुद संक्रमण की तीव्रता तथा अर्बुदों के वृद्धि प्राचल भी दर्ज किए गए। शीत सपंखों की आकारमीति तथा शीत सपंखों द्वारा दिए गए निम्फों का भी अध्ययन किया गया।

महत्वपूर्ण अनुसंधान निष्कर्ष	→	पृष्ठ - 01
परामर्शी	→	पृष्ठ - 03
कार्यशाला / संगोष्ठी / बैठकें	→	पृष्ठ - 04
प्रशिक्षण कार्यक्रम	→	पृष्ठ - 06
पेटेण्ट	→	पृष्ठ - 07
प्रकृति	→	पृष्ठ - 07
राजभाषा गतिविधियां	→	पृष्ठ - 07
प्रदर्शन कार्यक्रम	→	पृष्ठ - 07
गण्यमान्य का दौरा	→	पृष्ठ - 08
विविध	→	पृष्ठ - 08
मानव संसाधन समाचार	→	पृष्ठ - 08

• चम्पावत, अल्मोड़ा, बागेश्वर तथा पिथौरागढ़ से चालीस स्वीपिंग प्रतिदर्श एकत्रित किए गए। विभिन्न वन वृक्षों अजाडिरिक्टा इण्डिका, सिन्नामोमम तमाला, फाइकस रेसिमोसा, पायरस कोम्मयूनिस तथा क्वर्कस ल्यूकोट्राइकोफोरा से प्रयोगशाला पालन के लिए कीट लार्वा के आठ प्रतिदर्श एकत्रित किए गए जोकि एपेनटेलस प्रजा. के उद्भव के लिए जारी रहा। बीस एपेनटेलस प्रजा. की छटनी की गई। स्लाइड निर्माण एवं पहचान प्रगति में है।

• अल्मोड़ा, बागेश्वर, चम्पावत तथा पिथौरागढ़ जिलों से विभिन्न वानिकी वृक्षों : अजाडिरिक्टा इण्डिका, सिन्नामोमम तमाला, फाइकस रेसीमोसा, पायरस कोम्मयूनिस तथा क्वर्कस ल्यूकोट्राइकोफोरा से कीट अण्डों के बाइस प्रतिदर्श एकत्रित किए गए। एकत्रित प्रतिदर्शों से तीन अण्ड परजीव्याभों की छटनी की गई तथा प्रतिदर्शों को

प्रजाति स्तर तक : एनाफेज प्रजा., म्यामर पुलेसेल्लम तथा ट्रिस्सोल्कस लेटीसल्कस चिह्नित किया गया।

• उत्तराखण्ड में चकराता तथा मसूरी वन प्रभागों, जिला देहरादून; टिहरी गढ़वाल के धनौली में क्षेत्र सर्वेक्षण किए गए। 4 वन उप-प्रकारों (12/C1a बन ओक वन; 12/C1b मोरू ओक वन; 12/C2a खारसु ओक वन; 12/C2c नम देवदार वन) के 20 ट्रान्जेक्टों में प्रतिदर्श लिए गए। पेले जेजेबेल, डेलिएस सनाका को एकत्रित एवं परिरक्षित करने के साथ-साथ उत्तराखण्ड के लिए असामान्य एवं दुर्लभ प्रजातियों के 16 प्रतिदर्शों के एकत्रण के साथ कुल अढसठ प्रजातियों के नमूने लिए गए। तितलियों के आंकड़ा-संचय को अद्यतन करने के साथ-साथ दौरे करने/नमूने एकत्रित करने के लिए मसूरी वन प्रभाग, जोशीमठ-मलारी क्षेत्र के भौगोलिक

सूचना प्रणाली आधारित कृत्रिम रंगों के समेकित मानचित्र सृजित किए गए।

- क्षेत्र सर्वेक्षणों के दौरान बन ओक वृक्षों से एकत्रित, कैल्लीट्रिआ गिरोटिड (ईरीबिडी) नामक लेपीडोप्टेरा की 1 प्रजाति के 6 लार्वा पर पालन प्रयोग जारी रहे तथा प्रयोगशाला में जीवन इतिहास अध्ययनों के लिए उन्हें पाला गया व उनका अध्ययन किया गया। एक सिरामबिसिड तना छेदक, जायलोट्रेकस बेसिफ्यूलिगिनोसस के जीवन चक्र का अध्ययन खारसु ओक के कुन्दों पर तृतीय इन्सटार लार्वा चरणों के लिए किया गया। पूर्व-मानसून अवधि में, वृक्ष परिधि प्रस्तम्भ ऊंचाई, घनत्व एवं वनस्पति संघटन के लिए 20 क्वाड्रेट (10mb x 10m) स्थापित कर चकराता वन प्रभाग (देववन-कुंआतलानी), उत्तराखण्ड में छेदक जायलोट्रेकस बेसिफ्यूलिगिनोसस की उपस्थिति तथा क्षति को ज्ञात करने के लिए खारसु (क्यू. सेमीकार्पिफोलियो) वन में सर्वेक्षण किए गए। खारसु वनों से जीवन चक्र अध्ययनों के लिए छेदक द्वारा संक्रमित कुन्दे एकत्रित किए गए तथा वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून की प्रयोगशाला में लाए गए।
- कीटों की 300 प्रजातियों का डिजीटलीकरण किया गया। इन प्रजातियों के 600 छायाचित्रों को सम्पादित किया गया। प्रजातियों एवं उनके छायाचित्रों पर सूचना आंकड़ा-संचय में प्रविष्ट आंकड़ों को यह जाँचने के लिए कि आंकड़ा-संचय में प्रजाति का नाम या इसके छायाचित्र एवं अवस्थिति पर सूचना आंकड़ा-संचय में उचित रूप से प्रविष्ट की गई है, को कैबिनेटवार व दराजवार सत्यापित किया गया। 20 कैबिनेटों को सत्यापित किया गया। आंकड़ा-संचय को अपलोड करने की प्रक्रिया का सूत्रपात परियोजना “वन अनुसंधान संस्थान के राष्ट्रीय वन कीट संग्रह का डिजीटलीकरण एवं संवृद्धि, चरण- II (सूक्ष्म कीट)” के अंतर्गत किया गया।
- परियोजना “पोपलर पर्ण निष्पत्रक, क्लोसटेरा क्यूप्रेटा बट के विरुद्ध पोपलर कृन्तकों की प्रतिरोधकता हेतु जाँच” के अंतर्गत निष्पत्रण के कारण उत्पादन क्षति के लिए एकत्रित आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण तथा प्रतिरोधी कृन्तकों की जाँच के आकलन के लिए एकत्रित आंकड़ों का विश्लेषण किया गया। कृन्तकीय पौधशाला का अनुरक्षण किया गया।

- परियोजना “कुछ चयनित परजीव्याभों की जैव-प्रभावकारिता पर विशेष महत्त्व के साथ टैरोमैलिड परजीव्याभों (हाइमेनोप्टेरा : टैरोमैलिड) का विविधता अध्ययन” के अंतर्गत तितलियों के लार्वा एवं ग्राफियम डोसोन एवं ग्राफियम एगामेन्ोन के प्यूपा का एकत्रण तथा परजीवीकरण के लिए उनका अनावरण किया गया। प्रत्येक प्रजाति से एक विशिष्ट को लेकर एकत्रित 13 प्रतिदर्श माउण्ट्स की कार्ड माउण्टिंग तैयार किए गए एवं परिरक्षित किए गए। पर्ण अर्बुद एवं शल्ली कीट संक्रमित पत्तियों का एकत्रण किया गया। अर्बुद बनाने वाले कीटों का उद्गमन का अध्ययन करने के लिए फाइकस रेलिगिओसा तथा फाइकस रेसीमोसा के अर्बुद पर्णों तथा सायकोनियमों का एकत्रण किया गया। दो पंखों वाले एवं पंख-रहित हाइमेनोप्टेरन कीटों का स्थिति : उद्भव परिणत किया गया।
- ग्रीविआ ऑप्टिवा (भीमल) की टहनियों के विभिन्न व्यासों में सेपोनिन निर्धारण के लिए परीक्षण किए गए। कालसी तहसील के चार ग्रामों यथा जसउ, खराया, टिपाउ, मलहाउ एवं चान्दाउ में भीमल के वृक्षों का सर्वेक्षण किया गया एवं ग्रामीणों व कृषकों का साक्षात्कार किया गया तथा प्रश्नोत्तरी भरी गई और वृक्षों को माँपा गया।
- उत्तराखण्ड के दग्ध एवं अदग्ध चीड़ पाइन वनों में सर्वेक्षण किए गए, मृदा नमूने एकत्रित किए गए तथा प्रयोगशाला में विश्लेषण किया गया। बढ़ती मृदा गहराइयों के साथ सघन घनत्व भी बढ़ता है जो कि दग्ध में 1.03 से 1.58 g/cm<sup>3</sup> था, तथा अदग्ध चीड़ पाइन वनों में 0.94 से 1.21 g/cm<sup>3</sup> था, जल अवधारण क्षमता दग्ध में 39.85 से 64.77 प्रतिशत के स्तर तक थी तथा अदग्ध में 41.36 से 67.18 प्रतिशत के स्तर तक थी जो कि मृदा गहराइयों में कमी के साथ कम होती है, मृदा गहराइयों में बढ़ती के साथ दग्ध में pH 5.6 से 5.8 तक तथा अदग्ध स्थलों में 5.5 से 5.7 तक था, बढ़ती मृदा गहराइयों के साथ घटते हुए, मृदा आर्गेनिक कार्बन दग्ध में 0.71 से 5.05 प्रतिशत तक तथा अदग्ध वनों में 0.83 से 2.68 प्रतिशत तक था, उपलब्ध नाइट्रोजन तथा पोटाशियम का स्तर दग्ध स्थलों में 0.0091 से 0.0265 प्रतिशत एवं 0.0130 से 0.0375 प्रतिशत तक था तथा अदग्ध स्थलों में मृदा गहराइयों के साथ घटते हुए 0.0084 से 0.0162 प्रतिशत एवं 0.0097 से 0.018 प्रतिशत तक था। नवम्बर, 2017 के मृदा सर्वेक्षण में उत्तराखण्ड के ऊपरी यमुना वन प्रभाग के बड़कोट बीट, रवाई रेंज में

चीड़ पाइन वनाग्नि के अंतर्गत मृदा गहराइयों में किसी भी घटाव/बढ़ोतरी की प्रवृत्ति के बिना उपलब्ध फास्फोरस का स्तर दग्ध में 0.0014 से लेकर 0.0018 प्रतिशत तक तथा अदग्ध वनों में 0.0011 से 0.0016 प्रतिशत तक था। वनाग्नि के प्रभाव ने समग्र रूप से प्रकट किया कि अदग्ध चीड़ पाइन वनों की तुलना दग्ध में जल अवधारण क्षमता में कमी हुई है तथा बढ़ती मृदा गहराइयों के साथ घटते हुए अदग्ध वनों की तुलना दग्ध में उपलब्ध नाइट्रोजन में कमी हुई है। बढ़ती मृदा गहराइयों के साथ घटते हुए अदग्ध स्थलों की तुलना दग्ध में पोटेसियम में वृद्धि हुई। उत्तराखण्ड के ऊपरी वन प्रभाग के रवाँई रेंज के बड़कोट बीट के चीड़ पाइन वनों में नवम्बर, 2017 में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार अदग्ध स्थलों की तुलना दग्ध स्थलों में pH तथा उपलब्ध फास्फोरस किंचित रूप से कम हुए।

- गढ़वाल हिमालय (चार मुख्य वर्गों/वन प्रकारों तथा सात उप-प्रकारों/स्टैंडों) के गोपेश्वर वन प्रभाग के केदारनाथ वन्यजीव अभयारण्य के एल्पाइन सब-एल्पाइन वनों के मृदा नमूनों के भौतिक लक्षण-वर्णन संकेत देते हैं कि सघन घनत्व वर्ग-15/नम उच्च पर्वतीय शाकों, उच्च पर्वतीय चरागाहों, उच्च पर्वतीय चरागाहों, केदारनाथ वन्यजीव अभयारण्य में मृदा रूप-रेखा अध्ययन, गरुड़ चट्टी के सामने लिंकोली, गुप्तकाशी रेंज, गोपेश्वर वन प्रभाग ( $1.33 \text{ g/cm}^3$ ) तत्पश्चात वर्ग-12 (सी1ए) बन ओक वनों में मृदा रूपरेखा, (बन ओक मिश्रित), ग्राम संकरी सिविल सोयम वन, गुप्तकाशी रेंज, रूद्रप्रयाग वन प्रभाग ( $1.15 \text{ g/cm}^3$ ), वर्ग-12 (सी1ए)/बन ओक वन, (बन ओक मिश्रित), ग्राम

संकरी सिविल सोयम वन गुप्तकाशी रेंज, रूद्रप्रयाग वन प्रभाग ( $1.09 \text{ g/cm}^3$ ) तत्पश्चात वर्ग-12/हिमालयन नम शीतोष्ण वन, मुंगेरसंती रेंज, ऊपरी यमुना वन प्रभाग ( $0.98 \text{ g/cm}^3$  तथा  $0.94 \text{ g/cm}^3$ ) में खारसु ओक (*क्वकस सेमिकार्पिफोलियो*), वर्ग-16 (16/सी1) शुष्क उच्च पर्वतीय शाक, भैरवनाथ मन्दिर से ऊपर उच्च पर्वतीय चरागाह के डब्ल्यू.एस., केदारनाथ, गुप्तकाशी रेंज ( $0.92 \text{ g/cm}^3$ ), वर्ग-15 नम उच्च पर्वतीय शाक, चन्द्रशिला में उच्च पर्वतीय चरागाह, तुंगनाथ मन्दिर से ऊपर केदारनाथ वन्यजीव अभयारण्य, ऊखीमठ वन रेंज, वर्ग-15/नम उच्च पर्वतीय शाक, तुंगनाथ में उच्च पर्वतीय चरागाह, तुंगनाथ मन्दिर के बाएं केदारनाथ वन्यजीव अभयारण्य, ऊखीमठ वन रेंज निकट हेमवन्ती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय उच्च उन्नांश पी.पी. प्रयोगशाला तथा वर्ग-12/बन ओक वन (12/सी1ए), हिमालयन नम शीतोष्ण वन, भाटिया बीट, मुंगेरसंती रेंज में मृदा रूपरेखा एवं औगुर नमूना एकत्रण, ऊपरी यमुना वन प्रभाग ( $0.91 \text{ g/cm}^3$  तथा  $0.89 \text{ g/cm}^3$ ) में अधिक है तथा न्यूनतम सघन घनत्व तुंगनाथ में वर्ग-14/उप-एल्पाइन वनों यथा *एबिडिस पिण्ड्रो - रोडोडेण्ड्रान आर्बोरियम* वनों, तुंगनाथ मन्दिर की बाएं ओर ऊखीमठ वन रेंज ( $0.83 \text{ g/cm}^3$ ) में दर्शित हुआ।

- मसूरी वन रेंज के कैम्पटी जलागम के उप-जलागम में धारा प्रवाह के मापन के लिए एच-फ्लूयूमस (एक) तथा पार्सल्लस फ्लूयूमस (तीन) की स्थापना की गई।
- संबंधित खनन क्षेत्र में नदी तल सामग्री के निक्षेपण के आकलन के लिए हरिद्वार में गंगा नदी के खनन क्षेत्र में पूर्व-मानसून बेसलाइन के रूप में सर्वेक्षण क्रियाकलाप टोटल स्टेशन द्वारा निष्पादित किए गए।

'kɔp ou vuɔ ʔku | ʔFku] t kʂi jɔ

- गुजरात में सितम्बर, 2018 के दौरान स्थापित कैजुरिना कृन्तकीय मूल्यांकन परीक्षणों से रोपण के नौ माह पश्चात उत्तरजीविता एवं वृद्धि आंकड़ें एकत्रित किए गए। आकलन ने प्रकट किया कि कुछ कैजुरिना झुंगुनियाना कृन्तक तथा कैजुरिना इक्विसेटीफोलिया एवं सी. झुंगुनियाना के मध्य के अंतरविशिष्ट संकर के दो कृन्तकों ने सभी तीनों स्थलों नामतः राजकोट, हबटपुर तथा हथाब (भावनगर) पर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। राजकोट (भीतरी भाग) में अधिकतम उत्तरजीविता 98 प्रतिशत, हबटपुर में 50 प्रतिशत उत्तरजीविता (लवण भूमि) तथा हथाब (समुद्र तट) में 40 प्रतिशत उत्तरजीविता महसूस की गई।
- प्राणि विविधता के अंतर्गत, जयपुर एवं माऊंट आबू के राजभवनों से विभिन्न पक्षियों की कुल 45 प्रजातियां दर्ज की गईं। जयपुर तथा माऊंट आबू क्षेत्र से क्रमशः 22 प्रजातियां एवं 29 प्रजातियां दर्ज की गईं।

i j ke' kʂ

- टिहरी हाइड्रो डेवलपमेंट कार्पोरेशन इंडिया लि.; हिमाचल प्रदेश पावर कार्पोरेशन लि.; कर्नाटक स्टेट ऑफिशियल एथोरिटी; प.व.ज.प.मं., भारत सरकार, नई दिल्ली; कोल इंडिया लिमिटेड, कोलकाता; एन. टी.पी.सी. लि., नोएडा; एन.एम.डी.सी.लि., हैदराबाद;

सिंगरेनी कोल्लिएरिज कम्पनी लि., कोटागुडेम; छत्तीसगढ़ वन विभाग, रायपुर तथा वन एवं पर्यावरण विभाग, भुवनेश्वर द्वारा प्रदत्त दस परामर्शी परियोजनाओं पर भा.वा.अ.शि.प., देहरादून वर्तमान में कार्य कर रहा है।

dk Zky k@l akBh@cBd

Ø- l a

fo'k

l e; lof/k

y kHkFKZ

ou vub'ku l h'fku] nsj knw

1. सगंध तेल, इत्रसाजी एवं सुगंध-चिकित्सा 10-14 जून 2019 सौंदर्य-प्रसाधनविद, प्रसाधक, वैज्ञानिक, चिकित्सक, सुगंध चिकित्सक, व्यापारी, उद्यमी, उद्योगपति, हितधारक इत्यादि



व.अ.सं., देहरादून में सगंध तेल, इत्रसाजी एवं सुगंध-चिकित्सा पर प्रशिक्षण-सह-कार्यशाला

ou vkuq' h kd h, oao{k i z uu l h'fku] d k EcVjw

2. कावेरी नदी के जीर्णोद्धार में वानिकी हस्तक्षेपों की भूमिका 25 जून 2019 वन महाविद्यालय एवं अनुसंधान संस्थान, मेट्टापलायम; केन्द्रीय अकादमी राज्य वन सेवा (कासफोस); करुन्थ सम विश्वविद्यालय; नदी के लिए आंदोलनरत स्वयंसेवक, ईशा फाउंडेशन, कोयम्बटूर; डी.एफ. ओ., कोयम्बटूर; पूर्व-निदेशक, नित्याता नदी एवं अन्य संरक्षण संस्था, वैज्ञानिक



व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में कावेरी नदी के जीर्णोद्धार में वानिकी हस्तक्षेपों की भूमिका पर बैठक

' k'p ou vub'ku l h'fku] t k'k i j

3. राजस्थान की महत्वपूर्ण प्रकाष्ठ प्रजाति टेकोमेल्ला अनडूलाटा का वृक्ष सुधार 28 जून 2019 वैज्ञानिक, तकनीकी कार्मिक, अनुसंधान अध्येता

## o'kZou vuqZku | bFku] t ksgkV

- |  |                |  |
|--|----------------|--|
| 4. वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से ब्रह्मपुत्र नदी के जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का निर्माण | 18 जून 2019    | ब्रह्मपुत्र नदी घाटी के लोग                |
| 5. सिक्किम के लिए राज्य रेड्ड+ कार्य योजना का निर्माण  | 25-26 जून 2019 | स्थानीय लोग, वन आधारित समुदाय एवं वन विभाग |

## figeky; u ou vuqZku | bFku] f keyk

- |   |                |   |
|---|----------------|---|
| 6. हिमाचल प्रदेश के लिए राज्य रेड्ड+ कार्य योजना का निर्माण | 18-19 जून 2019 | गैर सरकारी संगठन, ग्रामीण विकास, लोक निर्माण विभाग, उद्यान विभाग, पशुपालन विभाग, कृषि, हिमाचल प्रदेश पर्यावरण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग तथा संयुक्त वन प्रबंधन समितियां |
|---|----------------|---|



हि.व.अ.सं., शिमला में हिमाचल प्रदेश के लिए राज्य रेड्ड+ कार्य योजना के निर्माण पर कार्यशाला

- |   |             |  |
|---|-------------|--|
| 7. नृ-औषधीय पादपों पर अनुसंधान एवं अनुप्रयोग  | 26 जून 2019 | वैज्ञानिक, अधिकारी, तकनीकी अधिकारी तथा अन्य अनुसंधान सहायता कार्मिक  |
| 8. वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से सिन्धु नदी के जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का निर्माण | 29 जून 2019 | हिमाचल प्रदेश, पंजाब तथा जम्मू एवं कश्मीर के राज्य वन विभाग, राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान, मृदा एवं जल संरक्षण, प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, सुदूर संवेदन तथा अन्य संबंधित विभागों के प्रतिनिधि, व.अ.सं., देहरादून तथा हि.व.अ.सं., शिमला से वैज्ञानिक, बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय नौनी से अकादमीशियन |

## ou mR kndr k l hFku] j kph

- |     |   |             |                                       |
|-----|---|-------------|---------------------------------------|
| 9.  | वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से महानदी एवं गोदावरी नदियों के जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का निर्माण | 10 जून 2019 | अधिकारी, वैज्ञानिक एवं कर्मचारी       |
| 10. | वन आनुवंशिक संसाधनों के संरक्षण में आण्विक जीवविज्ञान   | 19 जून 2019 | अधिकारी, वैज्ञानिक कर्मचारी एवं छात्र |

## ou t 6fofo/k k l hFku] g6j kkn

- |     |   |            |                                       |
|-----|---|------------|---------------------------------------|
| 11. | वानिकी हस्तक्षेपों के माध्यम से गोदावरी, कृष्णा एवं महानदी नदियों के जीर्णोद्धार के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट का निर्माण | 7 जून 2019 | नोडल अधिकारी एवं कुछ वरिष्ठ वैज्ञानिक |
|-----|---|------------|---------------------------------------|

## i 7 kkk dk Øe

Ø- l a fo"k l e; kof/k y kkkkz

## ou vuq akku l hFku] nsj knw

- |    |  |                    |   |
|----|--|--------------------|---|
| 1. | पौधशाला व्याधियां एवं उनका प्रबंधन         | 10-14 जून 2019     | झारखण्ड वन विभाग के वन रक्षक  |
| 2. | प्रकाष्ठ प्रजातियों का अभिज्ञान एवं कमियां | 27 तथा 28 जून 2019 | सैन्य अभियांत्रिकी सेवाएं, भारतीय सैन्य अकादमी, देहरादून के अधिकारी एवं अभियंता |

## ou vkuqfi kd h, oao{k i t uu l hFku] d k EcVjw

- |    |   |                |  |
|----|---|----------------|--|
| 3. | 'सूक्ष्म जैविकी , भौगोलिक सूचना प्रणाली एवं सुदूर संवेदन, वन आनुवंशिक संसाधन प्रबंधन, अनुसंधान विधियां, जैव-सांख्यिकी एवं वैज्ञानिक लेखन, पादप जैव-प्रौद्योगिकी एवं जैव-पूर्वक्षण | 13 मई-6 जून    | विभिन्न महाविद्यालयों से स्नातक, स्नातकोत्तर तथा B.Tech के जैव-प्रौद्योगिकी, जैव-रसायन विज्ञान एवं सूक्ष्म-जैविकी के छात्र |
| 4. | वानिकी प्रजातियों का बीज हस्तन, परीक्षण तथा गुणवत्ता नवांकुरों का उत्पादन   | 20-21 जून 2019 | कृषक एवं छात्र   |



व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में सूक्ष्मदर्शी के प्रयोग तथा चित्र विश्लेषक पर व्यवहारिक प्रशिक्षण प्रदान किया गया



व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में वानिकी प्रजातियों का बीज हस्तन, परीक्षण तथा गुणवत्ता नवांकुरों के उत्पादन पर प्रशिक्षण

## दक्षिण भारत, भारत सरकार द्वारा आयोजित कार्यक्रम

- |    |                               |                |   |
|----|-------------------------------|----------------|---|
| 5. | वानिकी में सांख्यिकीय विधियां | 10-11 जून 2019 | पोन्नेम्पेट वानिकी महाविद्यालय से M.Sc. (वानिकी) के छात्र एवं संकाय |
| 6. | कृषिवानिकी प्रणालियां         | 3-7 जून 2019   | एस.एच.आई.ए.टी., प्रयागराज से स्नातक कर रहे छात्र                    |
| 7. | वानिकी                        | 3-29 जून 2019  | मेवार विश्वविद्यालय के B.Sc. (वानिकी) तथा B.Sc. (कृषि) के छात्र     |

### विज्ञान

पेटेन्ट कार्यालय, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा वन अनुसंधान संस्थान को आविष्कार शीर्षक : यूकेलिप्टस संकर पणों से यूरसोलिक अम्ल के पृथक्करण की प्रक्रिया (पेटेन्ट आवेदन संख्या : 361/DEL/2009) के लिए एक पेटेन्ट स्वीकृत (पेटेन्ट संख्या : 313151, दिनांक 24.05.2019) किया गया। पेटेन्ट के आविष्कारक डॉ. प्रवीन ओनिअल, सहायक मुख्य तकनीकी अधिकारी तथा डॉ. रामेश्वर दयाल, पूर्व-प्रमुख, रसायन एवं जैव-पूर्वक्षण प्रभाग, व.अ.सं., देहरादून हैं।

### वन उत्पादकता

वन उत्पादकता संस्थान, राँची ने 26 जून 2019 को केन्द्रीय विद्यालय, पट्टाट्टू झारखण्ड में वानिकी जागरूकता पर प्रकृति कार्यक्रम आयोजित किया।

### हिन्दी कार्यशाला

व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में 24 जून 2019 को हिन्दी कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला की विषय-वस्तु "हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूपण तथा पत्राचार" थी।



व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर में हिन्दी कार्यशाला

### वन विज्ञान

काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संस्थान, बेंगलुरु ने 25 जून 2019 को काष्ठ विज्ञान, चन्दनकाष्ठ एवं अन्य वानिकी प्रजातियों पर प्रौद्योगिकी प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। वन विभाग के 124 कर्मचारियों एवं प्रशिक्षुओं ने कार्यक्रम में प्रतिभाग किया।

वर्षा वन अनुसंधान संस्थान, जोरहाट की अनुसंधान एवं विकास गतिविधियां :- बाँस कृषि, प्रवर्धन, पौधशाला, प्रबंधन, मूल्य वर्धन तथा बाँस परिरक्षण तकनीकियां, जैव प्रौद्योगिकी एवं ऊतक संवर्धन, लाख कृषि, वानस्पतिक बाग, और्चिडेरियम, कृमि खाद इत्यादि पर 18 जून 2019 एक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

x.; ekU dknkSk

- डॉ. धन सिंह रावत, मंत्री, उत्तराखण्ड सरकार ने 24 जून 2019 को वन अनुसंधान संस्थान का दौरा किया।



डॉ. धन सिंह रावत, मंत्री, उत्तराखण्ड सरकार

fofo/k

l hFku	fo' kSk fnu@ fo'k olr q	l e; kof/k
व.अ.सं., देहरादून; व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर; उ.व.अ.सं., जबलपुर; व.व.अ.सं., जोरहाट; व.अ.के.-कौ.वि., अगरतला; हि.व.अ.सं., शिमला; व.उ.सं., राँची	विश्व पर्यावरण दिवस – 2019	जून 2019
व.अ.सं., देहरादून; व.आ.वृ.प्र.सं., कोयम्बटूर; का.वि.प्रौ.सं., बेंगलुरु; उ.व.अ.सं., जबलपुर; व.व.अ.सं., जोरहाट; व.अ.के.-कौ.वि., अगरतला; हि.व.अ.सं., शिमला; व.उ.सं., राँची	अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2019	21 जून 2019

ekuo l h kku l ekpkj

fu; fDr

अधिकारी का नाम	नियुक्ति की तिथि
श्री अरुण सिंह रावत, भा.व.से., निदेशक, व.अ.सं., देहरादून	21.06.2019
श्री राजकुमार बाजपेयी, भा.व.से., स.म.नि.(प्रशासन), भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	17.06.2019
श्री संजय सिंह पुण्डीर, लेखा अधिकारी, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	03.06.2019
श्री हरेन्द्र सिंह रावत, लेखा अधिकारी, व.अ.सं., देहरादून	03.06.2019
श्री अशोक कुमार, एफ.आर.ओ., व.अ.सं., देहरादून	03.06.2019



## inkfir

अधिकारी का नाम	पदोन्नति की तिथि
डॉ. अरुंधति बरुआ, वैज्ञानिक – 'बी', व.व.अ.सं., जोरहाट	26.06.2019
श्री चन्द्र शर्मा, वैज्ञानिक – 'बी', भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	26.06.2019
सुश्री शाम्भवी यादव, वैज्ञानिक – 'बी', व.अ.सं., देहरादून	28.06.2019

## l skfuoflk

अधिकारी का नाम	सेवानिवृत्ति की तिथि
डॉ. पी.बी. मेशराम, वैज्ञानिक – 'जी', उ.व.अ.सं., जबलपुर	30.06.2019
डॉ. राम कीर्ति वर्मा, वैज्ञानिक – 'जी', उ.व.अ.सं., जबलपुर	30.06.2019
डॉ. अनिल नेगी, वैज्ञानिक – 'डी', भा.वा.अ.शि.प., देहरादून	30.06.2019
डॉ. सलिल धवन, ए.सी.एफ., व.अ.सं., देहरादून	30.06.2019
श्री अरुणेश कु. सिन्हा, पुस्तकालयाध्यक्ष, व.अ.सं., देहरादून	30.06.2019
श्री राजेश कु. भण्डारी, अवर सचिव, व.अ.सं., देहरादून	30.06.2019

## l jrkd

डॉ. सुरेश गैरोला, महानिदेशक, भा.वा.अ.शि.प., देहरादून

## Llknd eay

श्री विपिन चौधरी, उप महानिदेशक (विस्तार), अध्यक्ष

डॉ. (श्रीमती) शामिला कालिया, सहायक महानिदेशक (मीडिया एवं विस्तार), मानद सम्पादक

श्री रमाकान्त मिश्र, मुख्य तकनीकी अधिकारी, (मीडिया एवं विस्तार प्रभाग), सदस्य

## i R k; ku

- केवल निजी रूप से प्रसारण करने हेतु।
- वानिकी समाचार में, प्रकाशित सामग्री, संपादक मंडल के विचारों को अनिवार्यतः प्रतिबिंबित नहीं करती है।
- यहाँ प्रकाशित सूचना के लिए किसी भी प्रकार के नुकसान की भरपाई के लिए भा.वा.अ.शि.प. उत्तरदायी नहीं होगा।

\*\*\*\*\*